

**SHRI ALADI ARUNA alias V. ARUNACHALAM:** Sir, the hon. Minister of State for Home Affairs, Mr. Chidambaram has also commented.

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI):** Please conclude now.

**SHRI ALADI ARUNA alias V. ARUNACHALAM:** I am concluding. Sir. He said, "To create unity between the two factions, the price is very costly. The price is Rs. 1.80 crores." This is what is stated by the Home Minister. So, how are you going to examine the matter and how are you going to take action against these illegal transactions?

With these words, Sir, I conclude my speech.

#### ALLOCATION OF TIME FOR DISPOSAL OF GOVERNMENT AND OTHER BUSINESS

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI):** I have to inform Members that the Business Advisory Committee at its meeting held today, the 7th March, 1989, allotted time for Government Business as follows:—

*Business: Time allotted:*

1. Discussion on the Railway Budget for 1989-90.
2. Discussion on the General Budget for 1989-90.
3. days—March 8, 9, & 13, 1989.
4. days—March 15, 16, 27 and 28, 1989.

The Committee also recommended that the sittings of the Rajya Sabha fixed for Monday, the 20th, Tuesday, the 21st and Thursday, the 3rd March, be cancelled.

#### THE DIRECT TAX LAWS (AMENDMENT) BILL, 1989—Contd.

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) :  
आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं प्रत्यक्ष कर विधि (संशोधन) विधेयक, 1989 का समर्थन करने के लिए खड़ी हुई हूँ।

आपने जो मुझे बोलने का मौका दिया है, उसके लिए मैं आपकी शुकृगुजार हूँ।

अभी यह बात कही गई है कि हम इतने अधिक संशोधन करते हैं कि पूरा विधेयक एक नया रूप ले लेता है। इस पर मुझे यह बात याद आती है कि अर्थ-शास्त्र का एक नियम भी है कि प्रेशम के नियम के अनुसार पुरानी मुद्रा नई मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है क्योंकि लोगों को नई मुद्रा जमा करने का शौक होता है और चलन में पुरानी मुद्रा रह जाती है। दूसरी तरफ यह भी बात कही गई है कि नई मुद्रा पुरानी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है, क्योंकि लोग लेन-देन में नई मुद्रा को ही लेना पसंद करते हैं और पुरानी मुद्रा दब जाती है।

तो मेरे ख्याल से यह सही है कि नया संशोधन भी पुराने संशोधन को दबा देगा। हम अपनी जनता की आवश्यकताओं और परेशानियों को देख कर ही संशोधन करते हैं।

इसलिये यह संशोधन हमारी गरीब जनता के लिए बड़ा हितकारी होगा। अर्थशास्त्र में एक और बात कही गई है कि अगर एक पैरट-मिट्टु को भांग और पूति की परिभाषा सिवा दी जाये तो वह अर्थशास्त्री बन जाता है। तो मेरा यह कहना है कि हम अगर लोगों की जायज भांग की पूति कर देते हैं तो हमारा बजट भी, हमारा विधेयक भी कामयाब हो जाता है। हम सुलझे हुए पोलिटिशियन बन जाते हैं। मेरे कुछ सुझाव हैं। आय पर जो टैक्स लगाते हैं उसे पूरी आय के निर्धारण के बाद ही लगाना चाहिए। किसी आदमी के चार अंग्रे चलते हैं। लेकिन आप उसकी